Need to run Train Nos. 68019/20 and 58031/32 in Jharkhand on daily basis

डा. प्रदीप कुमार बालमुचू (झारखंड): उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान झारखंड के मजदूर, बिजनेसमेन और विद्यार्थियों की तकलीफों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। झारखंड में तीन महत्वपूर्ण industrial towns हैं — जमशेदपुर, बोकारो और धनबाद। Industrial town में काम करने के लिए मजदूर, पढ़ने के लिए विद्यार्थी और बिजनेस करने के लिए जो बिजनेसमेन हैं, वे लगातार आना-जाना करते हैं। महोदय, वहां सरकार द्वारा झारग्राम से धनबाद के लिए एक लोकल ट्रेन नं. 68019 और 68202 चलती थी। जैसा मैंने पहले कहा, इस ट्रेन में सब लोग रोजाना सफर करते थे, जिसमें मजदूर, विद्यार्थी और व्यापारी हैं, लेकिन अचानक उसे यह कहते हुए बन्द कर दिया गया कि चंद्रपुरा, जो बोकारो के बगल में है, चंद्रपुरा और धनबाद के बीच की लाइन के नीचे कोयले में आग लगी हुई है, जिसके चलते इस लाइन पर ट्रेन नहीं चल सकती है।

उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि यह ट्रेन बोकारो तक तो जा सकती है। मैं माननीय मंत्री जी का भी ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं, क्योंकि वे यहां उपस्थित हैं। यदि यह ट्रेन बोकारो तक जा सकती है, तो वहां तक ही चलाई जाए। यह ठीक है कि चंद्रपुरा और धनबाद के बीच की लाइन के नीचे आग है, तो वहां नहीं जाए, लेकिन यह बोकारो तक तो जा ही सकती है या धनबाद तक तो जा सकती है। यदि धनबाद तक भी नहीं गई, तो कम से कम आगरा तक तो जा सकती है, जिससे कम से कम जमशेदपुर और बोकारो के लोगों को वहां तक जाने की सुविधा मिल सके।

महोदय, मैं एक दूसरी ट्रेन के बारे में भी माननीय सदन के माध्यम से माननीय मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, जो टाटानगर से चकुलिया तक चलती है। यह भी passenger train है। इसका नंबर 58031 और 58032 है। यह भी डेली चकुलिया से जमशेदपुर आती-जाती है। इसमें भी मजदूर, विद्यार्थी और व्यापारी सफर करते हैं। यह ट्रेन पहले डेली चलती थी, लेकिन अब बिना कारण बताए अचानक इसे सप्ताह में सिर्फ दो दिन चलाया जा रहा है। अब, आप सोचिए मजदूर डेली काम करता है, इसलिए उसे काम पर डेली जाना होता है। यदि ट्रेन सप्ताह में दो दिन चलेगी, तो वह अपने काम पर कैसे जाएगा? अतः चूंकि मंत्री महोदय यहां उपस्थित हैं, उनसे मैं आपके माध्यम से अनुरोध करना चाहता हूं कि दोनों ट्रेनों में से एक को तो कम से कम बोकारो तक ले जाइए, यदि बोकारो तक संभव नहीं है, तो आगरा तक ले जाइए और दूसरी ट्रेन, जो चकुलिया और टाटानगर के बीच है, उसे डेली चलाइए— जैसे पहले चलती थी ताकि वहां के मजदूरों, विद्यार्थियों, व्यापारियों और आम लोगों को सुविधा मिल सके।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं माननीय सदस्य द्वारा सदन में उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करती हूं।

श्री जावेद अली खान (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

†**جناب جاوید علی خان (اتّر پردیش):** مہودے، میں بھی مانّئے سدسئے کے ذریعے اٹھائے گئے وشئے سے اپنے آپ کو سمبدّھہ کرتا ہوں۔

† Transliteration in Urdu script.

श्री सुरेंद्र सिंह नागर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री आलोक तिवारी (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

डा. अनिल कुमार साहनी (बिहार): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री रेवती रमन सिंह (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

श्री किरनमय नन्दा (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

कुछ माननीय सदस्य: महोदय, हम भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करते हैं।

Concern over the increasing incidents of suicide and mental tension in the armed forces personnel

श्री संजय सेठ (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, मैं संसद का ध्यान सशत्र सेनाओं में व्याप्त मानसिक तनाव की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। अभी कुछ दिन पहले CRPF के जवानों ने अपने एक Commandant की पिटाई कर दी, क्योंकि उसने एक बीमार सिपाही को अस्पताल ले जाने की अनुमति नहीं दी और एक अखबार की रिपोर्ट के अनुसार उस सिपाही की मृत्यु हो गई। यह घटना चिन्ता का विषय है।

महोदय, एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे सेना के जवानों में हर साल मानसिक तनाव के चलते लगभग 100 लोग आत्महत्या करते हैं। पिछले साल वर्ष 2016 में 125 सिपाहियों ने आत्महत्या की, जिनमें से 101 सेना के, 19 वायुसेना के और 5 सिपाही नेवी के थे। इसके अलावा कई मामले ऐसे भी आए हैं, जिनमें सशत्र सेनाओं के सिपाहियों ने मानसिक तनाव के चलते एक-दूसरे की भी हत्याएं की हैं।

महोदय, ऐसा नहीं है कि हमारे आला अधिकारियों और सरकार को तनाव की वजह का पता नहीं है। कई मामले ऐसे आए हैं, जिनमें सिपाहियों की लगातार कठिन परस्थितियों में posting, समय पर आवास की सुविधा न मिलना, अवकाश न मिलना, उपचार की सुविधा न मिलना, खराब खाना तथा कठिन रहन-सहन की स्थितियां है। सिपाहियों और अधिकारियों के बीच संवाद का अभाव रहता है तथा पारिवारिक गतिविधियां भी सिपाहियों की मानसिक स्थिति पर असर डालती हैं।